

सरकार का इसलिए है कि उस के पास अस्त्रास्त्र नहीं हैं और लड़ने में असमर्थ हैं? यदि यह सत्य है तो अध्यक्ष महोदय, हम बोलते हैं, आप एकाध बार सुनते हैं, फिर कह देते हैं आर्डर आर्डर क्योंकि आपके हाथ में बल्ल है, आप जब हम को कहते हैं, हम को बैठ जाना पड़ता है, नहीं बैठें तो आप निकाल देंगे, ऐसा डर रहता है, तो क्या यदि हमारी सरकार के हाथ में ताकत आये, शक्ति उपार्जित करे, परमाणु से भी बड़ी कोई शक्ति हो सकती है, उस को वह हासिल करे और फिर वह युद्ध को रोकना चाहे और कुछ कहना चाहे, तो क्या दुनिया के लोग नहीं मानेंगे उस शक्ति को? यदि हां, तो क्या सरकार यत्न करेगी कि ऐसी शक्ति बनाये?

**श्री स्वर्ण सिंह :** स्वामी जी ने दो बातों की चर्चा की। यह ठीक है कि परमाणु बम के मुताल्लिक जो हिन्द सरकार की नीति है उस को मैंने जाहिर किया, लेकिन दूसरी बात जो उन्होंने कही उस को मैं नहीं मानता कि हम कोई अपनी ताकत नहीं बढ़ाना चाहते। हमें आज जो भी खतरे बाहर के देशों से हैं उन से अपने देश को बचाने के लिए हम पूरी कोशिश कर रहे हैं और करते रहेंगे क्योंकि जो बाहर के खतरे हैं अगर उस का हम पूरा ध्यान न करें तो वह हमारी तरफ से कोताही होगी और मैं इसको नहीं मानता। हां, यह ठीक है कि स्वामी जी की तरह सिर्फ बातों में हम बाजू नहीं चढ़ाते हैं। बल्कि यह एक बड़ा गम्भीर सवाल है और इस के मुताल्लिक मन में एक दृढ़ इरादा और एक रिजाल्व होनी चाहिए और बातें कुछ कम होनी चाहिए इस के मुताल्लिक।

**श्री रामेश्वरानन्द :** अध्यक्ष महोदय, उन्होंने एक बात कही। मेरी बात जरा सुन लें। मैं सीधे ही बाजू चढ़ाता हूँ ऐसा मैंने आज तक नहीं किया। आप तो एक उपालम्भ

दे रहे हैं मेरे संबंध में। आप मुझे जो उत्तर दे रहे हैं वह मेरी समझ से अच्छा नहीं किया।

**अध्यक्ष महोदय :** यह मैं भी आप से इत्ताफा करता हूँ कि उन्होंने अच्छा नहीं किया।

**Shri Swaran Singh:** If he takes it that way, I should not have said that, particularly when he has no shirt and he cannot....

**अध्यक्ष महोदय :** मैं भी यही कहने वाला था कि बाजू वह कैसे चढ़ाते जब वह ऐसा कोई वस्त्र पहनते ही नहीं?

**Shri Swaran Singh:** That was factually also correct.

**Shri Kapur Singh:** Apart from preaching non-proliferation and partial test ban treaty, what other serious steps do the Government propose to take to defend ourselves against imminent nuclear blackmail and threat? This is what the House wants to know and not the other inanities.

**Shri Swaran Singh:** This question is about disarmament and non-proliferation. About our defence preparedness I am sure that the hon. Member and the House are aware of the statements that have been made from time to time by my colleague, the Defence Minister. I have nothing to add to what has already been stated by Shri Chavan in this connection.

पादरी माइकल स्काट से बरामद किए गए कागजात

+

\* 306: श्री हुकम चन्द कछवाय :

श्री रामेश्वरानन्द :

श्री रघुनाथ सिंह :

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :

क्या वैदेशिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत से खाना होते समय पादरी माइकल स्काट

से कुछ गुप्त कागजात तथा अन्य सामग्री भकड़ी गयी थी ;

(ख) यदि हां, तो ये कागजात तथा अन्य सामग्री कैसी है तथा सरकार ने इस के बारे में क्या कार्यवाही की है ;

(ग) क्या ब्रिटिश सरकार ने इन कागजातों तथा टोपों को वापिस करने के लिए हस्तक्षेप किया है ; और

(घ) यदि हां, तो इस के बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

**बंदेशिफ-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री**

(श्री दिनेश सिंह) : (क) और (ख). भारत छोड़ते समय रैव० माइकल स्काट से 44 दस्तावेज, 5 टोप और 29 फोटोग्राफ भिजे थे। इन दस्तावेजों में उन पत्रों की प्रतियां हैं जो कि छिपे नागाओं ने शांति मिशन को लिखी थी। बकाया दस्तावेजों को मोटे तौर पर 2 वर्गों में बांटा जा सकता है : पहले वर्ग में वे पत्र और नोट आते हैं जो कि रैव० माइकल स्काट ने प्रचारित किए थे ; दूसरे वर्ग में वे सब नोट आते हैं जो उनके विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। इनमें उस पत्र की भी एक प्रति है जो कि उन्होंने 1965 में संयुक्त राष्ट्र प्रधान सचिव ने नाम लिखा था।

(ग) जी, नहीं।

(घ) प्रश्न नहीं उठता।

**श्री हुकम चन्द कछवाय :** मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार ने इन के कागजातों से यह अन्दाज़ लगाया है या उन कागजातों में ऐसी बात मिलती है कि पिछले अनेकों वर्षों से यह योजनाबद्ध रूप से नागालैण्ड को स्वतन्त्र करने के लिए कार्यवाही कर रहे थे ?

**श्री दिनेश सिंह :** इन के जो विचार थे, वह, अध्यक्ष महोदय, सदन को भी मालूम है। काफी इस पर बहस हो चुकी है।

**अध्यक्ष महोदय :** दस्तावेजों से भी उन विचारों की पुष्टि होती है ?

**श्री दिनेश सिंह :** जी, हां।

**श्री हुकम चन्द कछवाय :** मैं यह जानना चाहता हूँ कि माइकल स्काट के विदेश जाने के बाद में भी वहां से उनकी गतिविधि उसी प्रकार की नागाओं को भड़काने की चलती रहती है और क्या इन्होंने नागालैण्ड में जो विद्रोह कर रहे हैं उन के पक्ष में भारत सरकार को कोई पत्र ऐसे लिखे हैं ? यदि हां, तो वह कौन से पत्र लिखे हैं ? क्या सरकार ने उनके पत्रों का कोई जवाब दिया है ? यदि हां, तो कौन सा ?

**श्री दिनेश सिंह :** मुझे ऐसे पत्रों का तो कोई ख्याल नहीं आता है। बीच में उन्होंने वहां से कुछ आम पत्र लिखे थे कि यह जो सामान उन का यहां पर रोका गया, उस के बारे में भी लिखा था और कागजात वगैरह जो रोके गए उनके लिए लिखा था और यह सदन को मालूम है, अखबारों में भी आया था कि उन्होंने एक किताब भी लिखी है और जिस का उन्होंने प्रकाशन किया है।

**श्री हुकम चन्द कछवाय :** मैंने पूछा कि क्या भारत सरकार को उन्होंने पत्र लिखा है ?

**अध्यक्ष महोदय :** उन्होंने कहा कि और कोई पत्र नहीं लिखे, इन्होंने कागजात और सामान के बारे में लिखे हैं।

**श्री हुकम चन्द कछवाय :** वहां से गति-विधि जो उनकी है. . . .

**अध्यक्ष महोदय :** वह भी उन्होंने कहा है कि किताब वगैरह छपी है वहां जाकर।

**श्री रामेश्वरानन्द :** अध्यक्ष महोदय, पादरी स्काट के चले जाने से भी ऐसा प्रतीत होता है कि वह समस्या समाप्त नहीं हुई। जो शेष पादरी उससे संबंधित वहां रहते हैं क्या वह इसी प्रकार का देशद्रोह का काम वहां नहीं कर रहे हैं? यदि कर रहे हैं, तो उन के प्रति क्या रवैया सरकार का है?

**श्री विनेश सिंह :** अध्यक्ष महोदय, ऐसा कहना मनासिब नहीं होगा कि जो भारत के नागरिक पादरी वहां रहते हैं, वह विद्रोह की बात कर रहे हैं।

**श्री रामेश्वरानन्द :** आपने क्या कोई जांच कराई है?

**अध्यक्ष महोदय :** उन्होंने कहा है कि वह ठीक नहीं है कहना। वह ऐसा नहीं कर रहे हैं।

**Shri Swell:** May I know whether the deporting of the Rev. Michael Scott has led to the improvement of the situation in Nagaland and whether the reported resignation of the Ao Ministry is a step towards the improvement in that direction?

**Shri Dinesh Singh:** The hon. Member has referred to the reporting of Rev. Michael Scott . . .

**Mr. Speaker:** One is "deporting" and the other is "reporting".

**Shri Swell:** They are both in different contexts.

**Mr. Speaker:** The first is the deporting of Rev. Michael Scott.....

**Shri Swell:** . . .and the second is the reported resignation of the Ao Ministry.

**Shri Dinesh Singh:** The Government felt that the presence of Reverend Michael Scott in Nagaland was not helpful to finding a solution and as such he has been sent out. We feel that it was a good thing for him to have been sent out at that time. So far as the position of the present ministry in Nagaland is concerned, that is a matter which is being discussed in the Assembly there.

**Mr. Speaker:** Has his going improved the position?

**Shri Dinesh Singh:** I said that his going has improved the position.

**Shri Daji:** In these papers any letters addressed by Reverend Michael Scott to (a) Pakistan, (b) any other foreign power and (c) regarding training of underground Nagas discovered?

**Shri Kapur Singh:** China in particular.

**Shri Dinesh Singh:** I am afraid, I cannot say categorically off-hand, but so far as my information is, there are no specific letters to any powers but general letters which have been circulated to other governments.

**Shri Tyagi:** Will you lay them on the Table of the House?

**Shri Daji:** It is not off-hand. Notice has been given and we are entitled to a reply.

**Shri Dinesh Singh:** As I said, from these 44, so far as my information goes, there are no specific letters to other powers but general letters which have been sent to all the powers and which have been circulated to many foreign countries.

**Shri Hari Vishnu Kamath:** What do they mean by not specific, but general?

**Shri Daji:** Will the letters be placed on the Table of the House?

**Shri Dinesh Singh:** I think, it might be better, if I may suggest, that we shall place it in the Library.

**Mr. Speaker:** That is all right.

श्री रघुनाथ सिंह: मैं यह जानना चाहता हूँ कि माइकल स्काट का अभी भी सम्पर्क फ्रिजो से और उनके रेबल लोगों से है या नहीं, और माइकल स्काट के अनुभव से लाभ उठाकर बर्मा सरकार ने जैसा ठोस कदम एक हफ्ता पहले उठाया है कि वह किसी फारेन पादरी को एलाऊ नहीं कर रहे हैं, क्या सरकार भी नांगालैण्ड में किसी फारेन पादरी को अलाऊ नहीं करेगी?

**Shri Dinesh Singh:** It is a suggestion for action.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: मैं यह जानना चाहता हूँ कि भारत सरकार ने पादरी स्काट की गतिविधियों के संबंध में क्या ब्रिटिश सरकार को भी लिखा है, जो वहाँ पर बंटे हुए इस प्रकार की किताब छपाकर भेजते हैं और बड्यन्त्र कराते हैं? यदि हाँ, तो उस सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

श्री दिनेश सिंह: इस किताब के संबंध में कोई विरोध-पत्र नहीं दिया है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: और किसी संबन्ध में?

**Shrimati Savitri Nigam:** It is very clear now from the various statements and letters published and printed by Reverend Michael Scott that he is in constant negotiations with the Naga rebels. Does the hon. Minister not think it proper to inform the British Government and seek their co-operation in putting an end to this sort of activity which is very much against Indian interests and in every way our affiliation as a member of the Commonwealth?

**Shri Dinesh Singh:** The situation in Nagaland is our internal problem and we would not like any interference from any other power.

**Shri S. M. Banerjee:** May I know whether it is a fact that before Reverend Michael Scott left India there are many letters in those letters, which are in the possession of the Government, which he addressed to the various countries giving them the picture that Nagaland is a separate entity and should remain separate? That is exactly what he is doing from England.

**Mr. Speaker:** The letters are being placed in the Library.

**Shri S. M. Banerjee:** He is still influencing the Naga rebel leaders who are likely to meet the Prime Minister for demanding a separate Nagaland.

**Shri Dinesh Singh:** It is true that Reverend Michael Scott has been pleading for a separate Nagaland.

**Mr. Speaker:** Is he still influencing the Nagas to demand a separate sovereign State?

**Shri Dinesh Singh:** He is obviously in touch with Phizo and others and I suppose he continues to take the same line.

**Shri Hem Barua:** Is it not a fact that Rev. Michael Scott has already started his campaign of slander and lies against India with headquarters in London and he has proposed that he is, very recently, approaching the U.N. Secretary General to be an arbitrator in the Indo-Naga dispute, as he calls it, and, if it is so, it is not a fact that the Rev. Michael Scott, who enjoyed the Congress hospitality for a couple of years in Nagaland and did all the mischief he could do, is continuing to do the same mischief from London, and may I know whether our Government are going to approach the British Government and tell the British Government

point blank that the Government of India will never tolerate this unfriendly act?

**Shri Dinesh Singh:** We can tell the British Government if it is so desired. But the British Government is already aware of our feelings in this matter . . .

**Shri Hem Barua:** You will not tell them . . . (Interruption).

**Shri Dinesh Singh:** Even when he was here, the House knows that he wrote the letter to the Secretary-General and the United Nations and no action has been taken on it. It is quite a matter in which we can certainly request the British Government and inform them that this is happening. The statement has been made here and they know it. The Prime Minister has already mentioned it to the Prime Minister of the United Kingdom. I do not think it would be desirable to take it up in any stronger form.

**Shrimati Savitri Nigam:** The reply of the hon. Minister was very wrong. It may be an internal matter. But it concerns us.

**Mr. Speaker:** The question is whether it would be profitable as well as desirable if our present sentiments, strong as they are, are conveyed to the British Government just at this moment.

**The Prime Minister and Minister of Atomic Energy (Shrimati Indira Gandhi):** If I may intervene, I have conveyed this to the British Prime Minister.

**Shri Hem Barua:** I could not follow the answer.

**Mr. Speaker:** This has been conveyed to the British Prime Minister.

**Shrimati Savitri Nigam:** What was the reaction?

**Mr. Speaker:** How can that be said now? **Shri Bhagwat Jha Azad.**

**Shri Hem Barua:** The hon. Minister of State for External Affairs said that we can communicate but they already know it. The Prime Minister says that she has already communicated it. The question arises as to what is the reaction of the British Prime Minister to our Prime Minister's suggestion. What is his reaction?

**Mr. Speaker:** **Shri Bhagwat Jha Azad.**

**Shri Hem Barua:** She is on the point of getting up and telling us.

**श्री भागवत झा आज़ाद :** माननीय राज्य मंत्री के इस वक्तव्य का समर्थन करते हुए कि नागालैण्ड की समस्याएं हमारी आन्तरिक समस्यायें हैं, लेकिन फिर भी अगर एक विदेशी सरकार और खासकर कामनवेल्थ का एक मित्र, जो अपने को मित्र कहता है, बार-बार अपने नागरिक को हमारी आन्तरिक समस्याओं में दखल देने के लिये उसको बराबर अधिकार देता है और हमारे प्रधान मंत्री द्वारा श्री विलसन के सामने इस बात को लाने के बावजूद भी आज माइकल रेवरेंड स्काट ये सब बातें कर रहे हैं, मैं जानना चाहता हूँ कि इस की पृष्ठभूमि में सरकार क्या कर रही है ?

**श्री दिनेश सिंह :** अध्यक्ष महोदय, रेवरेंड माइकल स्काट इस मामले में कोई आज से नहीं, बल्कि काफी दिनों से दिलचस्पी ले रहे हैं। फीजो जब वहाँ पर गये, तब भी हम ने, जो हमारे ख्यालात थे, ब्रिटिश गवर्नमेंट से कहे थे। इस वक्त भी जो हमारे ख्यालात हैं, हमारे प्रधान मंत्री ने ब्रिटिश प्रधान मंत्री को लिखे हैं। ये सब बातें उनको मालूम हैं। हमारे जो ख्यालात हैं या सदन में जो बातें कही जाती हैं, वे भी उनको मालूम होती हैं।

जहाँ तक ब्रिटिश गवर्नमेंट का कहना है कि वह खुद इस में कुछ नहीं कर रहे हैं।

वहाँ का एक नागरिक या कुछ और नागरिक, इस संबंध में उनके जो ख्यालात हैं, उनको वे सामने लाते हैं। माइकल स्काट ने जब इस किताब का वहाँ पर प्रकाशन किया था, उम्र समय भी एक दूसरे व्यक्ति ने उसका पूरा खण्डन भी किया था, उन्होंने अपने ख्यालात भी जाहिर किये थे। इसलिये दोनों बातें ब्रिटिश सरकार के सामने आ चुकी हैं।

मैं इस बात को फिर आपके समक्ष रखना चाहता हूँ कि नागालैण्ड का सवाल हमारा अपना घरेलू मामला है, उसे हम को यहाँ पर ही तय करना पड़ेगा और जितनी आसानी से हम यह तय कर लें, उतना ही अच्छा होगा।

विदेशों को संसत्सदस्यों के शिष्टमण्डल

+

\* 307. श्री म० ला० द्विवेदी :

श्री सुबोध हंसदा :

श्री स० चं० तामन्त :

श्री भागवत श्यामदाद :

क्या ब्रिटेन-फार्म मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) संसत्सदस्यों के शिष्टमण्डल का विदेशों में भेजा जाना बन्द करने के क्या कारण हैं, जिनको शुरूआत भारत व पाकिस्तान संघर्ष के तुरन्त बाद विदेशों में भारत के प्रति सद्भावना पैदा करने तथा पाकिस्तानी प्रचार का खण्डन करने के लिये की गई थी ;

(ख) क्या सरकार इस बात को कम महत्व देती है कि लड़ाई के समय की तुलना में शान्ति के समय बहुत अधिक मूल्यवान काम किया जा सकता है ; और

(ग) क्या सरकार का विचार ऐसे शिष्टमण्डल फिर से विदेशों में भेजना प्रारम्भ करने का है और यदि हाँ, तो ऐसा कब से प्रारम्भ किया जायेगा ?

1193(Ai)LSD—2.

**The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh):** (a) and (c). The Government of India send goodwill and special delegations of Members of Parliament and other important persons to explain our viewpoint abroad from time to time. This is a continuous process and the Government have not discontinued sending such delegations abroad.

(b) No, Sir, the Government are fully aware of the utility and importance of such delegations during peace time.

श्री म० ला० द्विवेदी : ऐसे डेलीगेशंस जो समय समय पर भेजे जाते हैं उन में सदस्यों के चयन के संबंध में क्या कोई आधार सरकार ने निश्चय किया है या जो भी प्रार्थना करता है और आप के पास पहुंचता है उन्हीं को उन में भेजा जाता है ?

श्री स्वर्ण सिंह : जवाब उस का सिर्फ यह है कि सब माननीय सदस्य एक से एक अच्छे हैं और उस में मेरा क्वेटरियन क्या रहता है उस का कोई आधार कहना बहुत कठिन है और यह भी नहीं है कि जो भी आये और भेजने के लिये कहे उस भेज दिया जाता है ऐसी भी बात नहीं है लेकिन जिस जगह जाना होता है वहाँ के हालात देख कर और वहाँ के लिए कौन साहब ज्यादा मौजू हो सकते हैं, उन को भेजा जाता है। जब बहुत से अच्छे मैम्बर साहबान हों तो उन में से जिन के मूताल्लिक ख्याल हों कि वह शायद ज्यादा अच्छे काम कर सकेंगे उन का खिदमत में अर्ज की जाती है कि वह तत्काल फरमाये और चले जायं।

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं जानना चाहता हूँ कि जबकि इस प्रकार के प्रतिनिधिमण्डल भेजना सरकार ने नियमित रूप से स्वीकार कर लिया है तो इस कार्य के लिए सरकार ने